बजरंग बाण

दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान।

तेहि के कारज सकल शुभ, सिध्द करैं हनुमान॥

जय हनुमंत संत हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी॥

जन के काज विलम्ब न कीजै। आतुर दौरि महासुख दीजै॥

जैसे कूदि सिंधु महि पारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा॥

आगे जाय लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुर लोका॥

जाय विभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरखि परमपद लीन्हा॥

बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा। अति आतुर यम कातर तोरा॥

अक्षय कमुर को मारि संहारा। लूम लपेटि लंक को जारा॥

लाह समान लंक जरि गई। जय जय ध्वनि सुरपुर में भई॥

अब विलम्ब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उरअन्तर्यामी॥

जय जय लखन प्राण के दाता। आतुर होई दुख करहु निपाता॥

जय गिरिधर जय जय सुख सागर। सुर-समूह-समरथ भटनागर॥

श्री हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले। बैरिहिं मारु वज्र की कीले॥

गदा वज्र लै बैरिहिं मारो। महाराज प्रभु दास उबारो॥

ओंकार हुंकार महाप्रभु धावो। बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो॥

ओं हीं हीं हीं हनुमंत कपीसा। ओं हुँ हुँ हुँ हनु अरि उर-शीशा॥

सत्य होहु हरि शपथ पाय के। राम दूत धरु मारु धायके॥

जय जय जय हनुमंत अगाधा। दुख पावत जन केहि अपराधा॥

पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत हौं दास तुम्हारा॥

वन उपवन मग गिरि माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥

पाँय परौं कर जोरि मनावौं। यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥

जय अंजनि कुमार बलवंता। शंकर सुवन वीर हनुमंता॥

बदन कराल काल-कुल घालक। राम सहाय सदा प्रति पालक॥

भूत, प्रेत, पिशाच निशाचर अग्नि बैताल काल मारी मर॥

इन्हें मारु, तोहि शपथ राम की। राखु नाथ मर्यादा नाम की॥

जनक सुता हरिदास कहावो। ताकी शपथ विलम्ब न लावो॥

जय जय जय धुनि होत अकाशा। सुमिरत होत दुसह दुख नाशा॥

चरण शरण कर जोरि मनावौं। यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥

उठु उठु चलू तोहि राम दुहाई। पांय परौं कर जोरि मनाई॥

ओं चं चं चं चं चपल चलन्ता। ओं हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता॥

ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल। ओं सं सं सहमि पराने खल दल॥

अपने जन को तुरत उबारो। सुमिरत होय आनन्दहमारो॥

यह बजरंग बाण जेहि मारे। ताहि कहो फिर कौन उबारो॥

पाठ करैं बजरंग बाण की। हनुमान रक्षा करैं प्राण की॥

यह बजरंग बाण जो जापैं। ताते भूत प्रेत सब कापैं॥

धूप देय अरु जपै हमेशा। ताके तन नहिं रहै कलेशा॥

दोहा

प्रेम प्रतीतिहि कपि भजे, सदा धरै उर ध्यान।

तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्धि करै हनुमान॥